॥ श्रीहरिः ॥

ईशादि नौ उपनिषद्

(ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य,
ऐतरेय, तैत्तिरीय और श्वेताश्वतर-उपनिषद्)

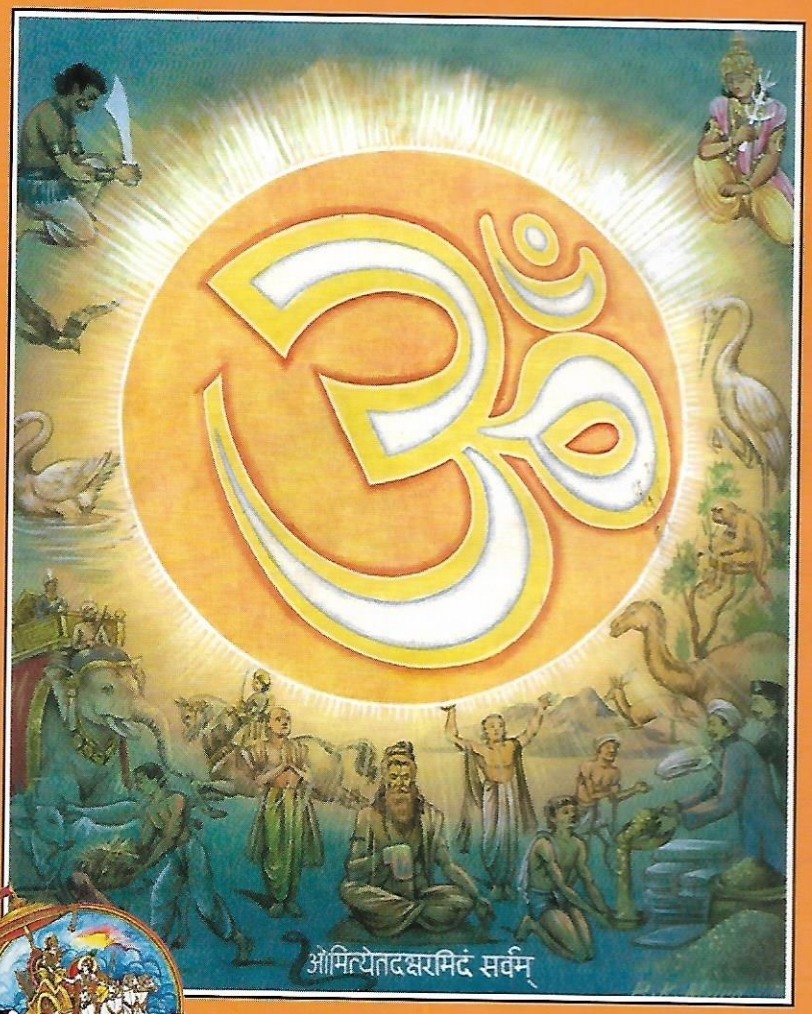

गीताप्रेस, गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

॥ ॐ ॥

ईशादि नौ उपनिषद्

(ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य,
ऐतरेय, तैत्तिरीय और श्वेताश्वतर-उपनिषद्)

[मन्त्र, अन्वय, हिंदीमें अन्वयार्थ, प्रत्येक मन्त्रकी सरल हिंदी व्याख्या, मन्त्रोंकी वर्णानुक्रमणिका तथा विषय-सूचीसहित]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

University Department of Yoga RU
No/PGDY/207
Library

DROLIA PUSTAK BHANDAR
Yoga, Ayurveda, Religious Books & Satkarma
Acupressure evam Magnate Goods
09458949381, 01334-260614,09837300687
Near Bharat Mata Mandir, Haridwar-249410 (U.K.) INDIA
E-mail : drolia_books@yahoo.co.in
Website : www.droliabooks.com

व्याख्याकार—हरिकृष्णदास गोयन्दका

विषय-सूची

(१) ईशावास्योपनिषद्

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
	उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ	२७
१-२	सर्वव्यापक परमेश्वरका निरन्तर स्मरण करते हुए निष्कामभावपूर्वक कर्म करनेका विधान	२८
३	उपर्युक्त मार्गके विपरीत चलनेवालोंकी दुर्गतिका कथन	२९
४-५	उपास्यदेव परब्रह्म परमेश्वरके स्वरूपका प्रतिपादन	३०
६—८	परब्रह्म पुरुषोत्तमको जाननेवाले महापुरुषकी स्थिति तथा तत्त्वज्ञानके फलका निरूपण	३२
९—११	विद्या और अविद्याकी उपासनाके तत्त्वका निरूपण	३४
१२—१४	सम्भूति और असम्भूतिकी उपासनाके तत्त्वका निरूपण	३८
१५-१६	भक्तके लिये अन्तकालमें परमेश्वरकी प्रार्थना	४१
१७	शरीरत्यागके समय प्रार्थना	४३
१८	परमधाम जाते समय अर्चिमार्गके अग्नि-अभिमानी देवतासे प्रार्थना	४४
	शान्तिपाठ	४६

(२) केनोपनिषद्

	उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ	४७

प्रथम खण्ड

१	इन्द्रियादिकोंका प्रेरक कौन है—इस विषयमें शिष्यका प्रश्न	४८
२—८	उत्तरमें गुरुद्वारा इन्द्रियादिकोंको सत्ता-स्फूर्ति देनेवाले सर्वप्रेरक परब्रह्म परमात्माका निरूपण एवं संकेतसे उसकी अनिर्वचनीयताका प्रतिपादन	४९

द्वितीय खण्ड

१	'जीवात्मा परमात्माका अंश है और सम्पूर्ण इन्द्रियादिमें जो शक्ति है, वह भी ब्रह्मकी ही है—' इतना जान लेना ही पूर्णज्ञान नहीं है—यह कहकर गुरुका ब्रह्मज्ञानकी विलक्षणताविषयक संकेत करना	५४

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
२	शिष्यद्वारा विलक्षणतापूर्वक अपनी अनुभूतिका वर्णन	५५
३-४	गुरु-शिष्य-संवादका निष्कर्ष	५६
५	ब्रह्म-तत्त्वको इसी जन्ममें जान लेनेकी अत्यावश्यकताका प्रतिपादन	५७

तृतीय खण्ड

१-२	परब्रह्म परमात्माकी महिमा न जाननेके कारण देवताओंका अभिमान और उसके नाशके लिये यक्षका प्रादुर्भाव	५९
३—६	यक्षको जाननेके लिये अग्निदेवका प्रयत्न और यक्षके द्वारा अग्निदेवके अभिमानका नाश	६०
७—१०	यक्षको जाननेके लिये वायुदेवका प्रयत्न और यक्षके द्वारा वायुदेवके अभिमानका नाश	६३
११-१२	यक्षको जाननेके लिये इन्द्रदेवका प्रयत्न, यक्षका अन्तर्धान होना तथा उमादेवीका प्राकट्य और उनसे इन्द्रका प्रश्न	६५

चतुर्थ खण्ड

१—३	उमादेवीद्वारा यक्षरूपमें प्रकट परब्रह्मके तत्त्वका उपदेश, उपदेश पाकर इन्द्रको ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति तथा अग्नि, वायु और इन्द्रकी श्रेष्ठता एवं उनमें भी इन्द्रकी सर्वश्रेष्ठताका निरूपण	६७
४	आधिदैविक दृष्टान्तसे ब्रह्मज्ञानकी पूर्वावस्थाके विषयमें सांकेतिक आदेश और उसका महत्त्व	६९
५	उसी प्रकार आध्यात्मिक दृष्टान्तसे ब्रह्मज्ञानकी पूर्वावस्थाके विषयमें सांकेतिक आदेश और निरन्तर प्रेमपूर्वक उसका स्मरण होनेका कथन	७०
६	परब्रह्मकी उपासनाका प्रकार और फल	७१
७	उपसंहार	७२
८-९	ब्रह्मविद्याके साधनोंका वर्णन तथा ब्रह्मविद्याका रहस्य जाननेकी महिमा	७२
	शान्तिपाठ	७४

(३) कठोपनिषद्

	उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ	७५

प्रथम अध्याय

(प्रथम वल्ली)

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
१—४	महर्षि उद्दालकके द्वारा यज्ञ करनेके अनन्तर दक्षिणाके रूपमें गोधन देते समय नचिकेतामें आस्तिकताका आवेश और पिता-पुत्र-संवाद ...	७६
५-६	नचिकेताका धैर्यपूर्ण विचारपूर्वक पिताको आश्वासन देना	७९
७-८	नचिकेताका यमलोक जाना और यमराजपत्नीद्वारा यमराजसे आतिथ्य-सत्कारके लिये प्रार्थना	८०
९	यमराजद्वारा नचिकेताका सत्कार और तीन वर माँगनेके लिये कहना ...	८२
१०-११	नचिकेताद्वारा प्रथम वरमें पितृ-परितोषकी याचना और यमराजद्वारा उक्त वर-प्रदान	८३
१२-१३	नचिकेताद्वारा द्वितीय वरमें स्वर्गकी साधनभूत अग्निविद्याकी याचना ...	८४
१४—१९	यमराजद्वारा फलसहित 'नाचिकेत' अग्निविद्याका वर्णन	८५
२०—२२	नचिकेताद्वारा तृतीय वरमें आत्मज्ञानके लिये याचना और यमराज-द्वारा आत्माके तत्त्वज्ञानकी कठिनताका प्रतिपादन तथा नचिकेताकी दृढ़ताका वर्णन	८९
२३—२५	यमराजका नचिकेताको आत्मतत्त्वविषयक प्रश्नके बदलेमें भाँति-भाँतिके प्रलोभन देना	९२
२६—२९	नचिकेताकी परम वैराग्यपूर्ण उक्ति तथा आत्मतत्त्व जाननेका अटल निश्चय	९५

(द्वितीय वल्ली)

१-२	यमराजद्वारा ब्रह्मविद्याके उपदेशका आरम्भ और श्रेय-प्रेयका विवेचन ...	९८
३—६	आत्मविद्याभिलाषी नचिकेताके वैराग्यकी प्रशंसा तथा अविद्यामें रचे-पचे मनुष्योंकी दुर्दशाका कथन	१००
७—९	आत्मतत्त्वको जाननेवालोंकी महिमा तथा तत्त्वज्ञानीकी दुर्लभताका वर्णन और नचिकेताकी प्रशंसा	१०४
१०-११	यमराजद्वारा अपने उदाहरणसे निष्कामभावकी महिमाका वर्णन एवं नचिकेताकी निष्कामताका वर्णन	१०७
१२-१३	परब्रह्म परमात्माकी महिमा	१०९

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेस, गोरखपुरसे

प्रकाशित

उपनिषद्

ईशादि नौ उपनिषद्	अन्वय, हिंदी व्याख्यासहित
बृहदारण्यकोपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
छान्दोग्योपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
ईशावास्योपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
केनोपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
कठोपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
माण्डूक्योपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
मुण्डकोपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
प्रश्नोपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
तैत्तिरीयोपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
ऐतरेयोपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
श्वेताश्वतरोपनिषद्	हिंदी अनुवाद शांकरभाष्यसहित
ईशादि नौ उपनिषद् (शांकरभाष्य)	नौ उपनिषदोंके मन्त्र, मन्त्रानुवाद, शांकरभाष्य एवं हिन्दी-भाष्यार्थ